7. ठाकुर का कुआँ

PART - 1 (जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो ------------- उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कंधा देना– सहायता करना/ सहारा देना
2. पानी की खराबी जाती रहती है – पानी शुद्ध हो जाती है
3. हाथ–पाँव तुडवाना– बुरी तरह पीटना
4. रहा नहीं जाना – सह न पाना
5. एक के पाँच लेना – ज़्यादा सूद माँगना
6. कुएँ पर चढने देना – कुएँ से पानी भरने देना
7. डाँट बताना – बुरा कहना/ दोष निकालना
8. बढ जाना – अधिक हो जाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. गंगी ठाकुर के कुएँ से पानी ले नहीं सकती थी । क्यों ?
   गंगी निम्नजाति की मानी जाती है । / छुआछूत की प्रथा है ।
2. ‘ यह पानी कैसे पिओगे ? ’- गंगी ने ऐसा क्यों पूछा ?
   क्योंकि पानी में बदबू थी
3. दूर से लोग डाँट बताएँगे । क्यों ?
   वे निम्न जाति के हैं ।
4. पानी में सख्त बदबू कैसे आयी ?
   कुएँ में कोई जानवर गिरकर मरने से
5. खराब पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी ।– पानी के खराब होने के क्या–क्या कारण हो सकते हैं ?
   कुएँ के पानी में कोई जानवर गिरकर मर जाने से
6. ‘ ठाकुर के कुएँ पर कौन चढने देगा ? ’ गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?
   गंगी चमार जाति की है । वर्ण व्यवस्था के अनुसार वह अछूत थी । उनकी छाया तक ऊँच जाति अपवित्र मानी जाती थी । इसलिए गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती ।
7. ‘ गंगी ने जोखू को गंदा पानी पीने को न दिया ।‘– क्यों ?
   क्योंकि वह जानती थी खराब पानी से पति की बीमारी बढ जाएगी ।
8. गंगी नहीं जानती थीकि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है । - यहाँ किस सामाजिक वास्तविकता प्रकट होती है ?
   यहाँ गंगी की अशिक्षित हालत का संकेत है । निम्नजाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । इसलिए उनमें अनजानी, अंधविश्वास आदि भी देखे जाते हैं । जाति के नाम पर किसीसे शिक्षा मिलने का अपना अधिकार छीनना उचित नहीं है ।
9. ‘ मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से ? ’- यहाँ जोखू की किस की ओर संकेत है ?
   जोखू निम्नजाति में जन्मा था । उस समय जातिप्रथा ज़ोरों में था । निम्नजाति के लोगों को उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं था । पीने का पानी तक उन्हें निषेध था ।
10. ‘ पानी कहाँ से लाएगी ? ’- जोखू के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।
    गंगी पानी लाते कुएँ में कोई जानवर गिरकर मरा है । निम्नजाति के होने से उन्हें ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लाने की अनुमति नहीं थी । यदि ऐसा किया तो उच्चजाति के लोग उसे जान से मार डालेगा । कोई तीसरा कुआँ गाँव में नहीं था । इसलिए शुद्ध पानी लाने की कठिनाई की ओर यहाँ संकेत है ।
11. ‘ क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ’- गंगी के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।
    अछूत होने के कारण गंगी को कुएँ से साफ पानी भरने का भी हक नहीं है । सभी अधिकार समाज में उच्च माननेवालों के पास है । गंगी को समझ में नहीं आती कि लोग कैसे श्रेष्ठ बनते हैं । यहाँ समाज की असमानता के विरुद्ध गंगी का आक्रोश ही प्रकट होता है ।
12. हाथ-पाँव तुडवा आएगी और कुछ न होगा । - जोखू के इस कथन पर आपका विचार क्या है?
    यह वाक्य गंगी से जोखू का कथन है । इस कथन के ज़रिए जोखू एक सामाजिक सत्य को हमारे सामने प्रस्तुत करता है । इसमें छुआछूत के भावना के विरुद्ध जोखू का आक्रोश हम सुन सकते हैं । निम्न जाति के लोगों को उच्च माननेवालों के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । ये लोग उच्च वर्ग के लोगों की क्रूरता सहकर जीने को विवश थे ।
13. यहाँ किस कडुवे सत्य के बारे में चर्चा हुई है ?
    प्रस्तुत वाक्य में चर्चित कडुवा सत्य जाति प्रथा है । पानी, खाना, कपडा और घर मानव की बुनियादी ज़रूरतें हैं । इन्हें मिलने का अधिकार सबका है । जाति के नाम पर ऐसा भेदभाव रखना उचित नहीं है ।
14. जोखू लोटे का पानी क्यों पी नहीं सका ?
    लोटे के पानी से सख्त बदबू आ रही थी । ऐसे बदबूदार पानी पीने से बीमारी बढ जाने की संभवना होने से पत्नी गंगी ने उसे वह पानी पीने न दिया था ।

15. पटकथा (शुरुआत भाग)

स्थान – एक झोंपडी का भीतरी भाग।

समय – दोपहर के दो बजे ।

पात्र – गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)

दृश्य का विवरण – प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद –

जोखू – बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।

गंगी – अभी लाती हूँ ।

जोखू – यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?

गंगी – गाँव के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?

जोखू – मारे प्यास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !

गंगी – (लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी । कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।

जोखू – प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी – मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ । आप लेट जाइए ।

जोखू – दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी – ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ?

जोखू – हाथ–पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।

गंगी – आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।

जोखू – ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

16. समाचार तैयार करें ।

कुएँ में मरा जानवर ; पीने के पानी केलिए तरसते लोग

स्थान : .... यहाँ के निम्न वर्ग के लोग के कुएँ में पिछले दिन एक मरे जानवर को दिखाई दिया । पानी गंदा होने से उससे बदबू आ रही है । निम्न वर्ग के लोगों के पानी लेने का एकमात्र आश्रय यह कुआँ था । पेयजल के अभाव से यहाँ लोग बहुत मुसीबत में हैं । पिछले दिनों से इस कुएँ के पानी का उपयोग करते लोग आशंका में है । ऊँचे वर्ग के लोगों के कुएँ तक जाने की अनुमति न होने के कारण गरीब लोग चिंतित है ।

PART - 2 (रात के नौ बजे थे । ------------- परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. साफ निकल जाना – बिना किसी तकलीफ से बच जाना 2. छाती पर साँप लोटना– ईर्ष्या में जलना/ अत्यंत जलन होना

3. मौके का इंतज़ार करना– अवसर की प्रतीक्षा करना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1.' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं '– यहाँ किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत है ?

जातिप्रथा

2.' सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते ।'– क्यों ?

वे नीची जाति के हैं ।

3.' एक के क छंटे '– का मतलब क्या है ?

सबसे बुरा

4. गंगी का विद्रोही दिल किसपर चोटें करने लगा ?

रिवाज़ी पाबंदियों और मज़बूरियों पर

5. ' ठाकुर का कुआँ ' कहानी में चर्चित मुख्य समस्या क्या है ?

ऊँच-नीच का भेदभाव

6. मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका ।– इसका क्या मतलब है ?

पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे । आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है । लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं ।

7. ऊँच–नीच के भेदभाव पर अपना विचार क्या है ? लिखें।

हमें ऊँच–नीच के भेदभावों को छोडना चाहिए। जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है। किसीको जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है।

8. रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है। क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?

पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है। इसपर सबका समान अधिकार है। पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है। इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है।

9. गंगी के विद्रोही दिल में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध क्या-क्या विचार आते हैं ?

हम क्यों नीच हैं ? उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं। लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है। हम जैसे अछूत असहाय होकर उनके अत्याचार के शिकार हो रहे हैं। यह हालत तो बदल जाना ही होगा।

10.' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?

समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है। उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं। लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है। अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं। यह हालत तो बदल जाना ही होगा। जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है। ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है। जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है।

11. गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा। - यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है?

जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था। निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी। निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे। उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे।

12. टिप्पणी – समाज में सभी लोगों को समान अवसर का अधिकार है

हमारे देश में अनेक लोग रहते हैं। उनके रंग, रूप, वेश, भाषा आदि भिन्न हैं। कुछ लोग अमीर हैं तो कुछ लोग गरीब हैं। लेकिन इनके बीच सामाजिक असमानता हम देखते हैं। यह आज की एक बडी समस्या है। अन्न, वस्त्र, घर आदि मानव की आवश्यकताएँ हैं। लेकिन समाज के कुछ लोग इनसे वंचित हैं। हमारे संविधान के अनुसार हर एक नागरिक को खाना मिलने का, घर मिलने का, कपडे मिलने का और पीने के पानी मिलने का अधिकार है। फिर भी समाज के सभ्य कहे जानेवाले संपन्न वर्ग गरीब या निम्न वर्ग के लोगों को कुचल डालते हैं। इस कारण निम्न वर्ग के लोगों को पीने केलिए शुद्ध पानी भी नहीं मिलता है। यह उचित नहीं है। समाज के सभी लोगों को समान रूप से जीने का अवसर मिलना चाहिए।

14. पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है

जातिप्रथा एक अभिशाप है

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें ...
   जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें।
2. छुआछूत दूर करो ...
   समाज की उन्नति पाओ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं ...
   जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध।
4. सभी मानव समान ...
   जाति न देखो, कर्म देखो।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म
   जाति ने नाम पर अत्याचार न करें।
6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो ...
   याद दें ... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा
   जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो।
8. करो रोकथाम जातिप्रता का ...
   अपनेलिए ... मनुष्यता केलिए ...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ ...
   इसे मिटाओ ... सभी मानवों को समान मानो।

विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस – मार्च 21

15. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है। आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं। लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है। सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है। उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है। निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी। निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे। उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे। इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है। जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए। इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है।

PART - 3 (कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई ----------- अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. लहू थूकना – मुँह से खून आना
2. रत्ती भर उम्मीद न होना – आशा करने की शिथिति में न होना
3. मुँह सीधा न होना – प्रसन्नता का भाव न होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. औरतें कुएँ के पास क्यों आई थीं ?

कुएँ से घरवालों केलिए घडे में ताज़ा पानी भरकर लाने केलिए

2. गंगी वृक्ष के अंधेरे साये में जा खडी हुई। क्यों ?

कुएँ के पास किसीके आने की आहट होने से

3. गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। क्यों ?

कुएँ के पास कोई नहीं था ।

4. गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था ।– गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा ?

अछूत होने के कारण गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती । रात की निर्जन हालत में सही, गंगी जीवन में पहली बार ठाकुर के कुएँ की जगत पर चढी, इससे उसको गर्व का अनुभव हुआ होगा ।

5. पटकथा (दो औरतें कुएँ से पानी भरने आयीं)

स्थान - ठाकुर के कुएँ के पास ।
समय - रात के 9 बजे ।
पात्र - दो औरतें । (दोनों लगभग 40 साल की, साड़ी पहनी हैं ।)
घटना का विवरण - दोनों अपने घरवाले केलिए ताज़ा पानी भरने कुएँ के पास आती हैं । उनके बीच बातें हो रही हैं ।

संवाद –

पहली औरत – (जलन के साथ) देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं ।

दूसरी औरत – ठीक कहा तुमने । खाना खाने बैठते ही हुकम चलाया कि कुएँ से ताज़ा पानी भर लाओ । घडे केलिए पैसे नहीं है ।

पहली औरत – (गुस्से में) हमें आराम से बैठे देखकर मरदों को जलन होती है ।

दूसरी औरत - हाँ, ये लोग एक कलसिया भर पानी भरकर नहीं आते । बस हुकम चला दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ, जैसे हम लौडियाँ ही तो हैं ।

पहली औरत – लौडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपडा नहीं मिलती क्या? दस-पाँच रुपए भी छीन-झपटकर लेती हो न? और क्या चाहिए तुम्हें?

दूसरी औरत – मत लजाओ दीदी ! छिन्न भर आराम करने को मन बहुत तरसता है । इतना काम और कहीं करें तो इससे आराम मिलती । यहाँ काम करते हुए मर जाने पर भी किसीके चेहरे पर खुशी नहीं दिखता ।

पहली औरत – तुम सच कहती हो दीदी, ये लोग हमें नौकर समझकर रखे हैं ।

दूसरी औरत – ज़रूर । अब हम लौट चलें । वे हमें बुला रहे होंगे ।

पहली औरत – ठीक है । जल्दी चलिए ।

(पानी भरकर दोनों वहाँ से वापस चलते हैं ।)

PART - 4 (उसने रस्सी का फंदा ---------- वही मैला-गंदा पानी पी रहा है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कलेजा मज़बूत करना – धैर्य का अवलंबन करना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. गंगी रस्सी छोडकर क्यों भाग गई ?

ठाकुर के द्वारा पकडे जाने डर से

2. गंगी क्यों रात को ठाकुर के कुएँ पर जाती है ?

पति केलिए साफ पानी लेने केलिए

3. गंगी के हाथ से रस्सी क्यों छूट गई ?

गंगी को मालूम हुआ कि दरवाज़ा खोलकर ठाकुर आनेवाला है । इस कारण से वह डर गयी और रस्सी हाथ से छूट गई ।

4. कहानी में ठाकुर के दरवाज़े की तुलना किससे की है ?

शेर के मुँह से

5. शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा । यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है ?

शेर एक खूँखार जानवर है । उसके सामने से बच जाना मुश्किल है, पर असंभव नहीं । पर ठाकुर जैसे उच्च वर्ग के लोग शेर से भी अधिक क्रूर है । एक अछूत को कुएँ से पानी भरते देखें तो उसे जरूर मार ही डालेगा । गंगी यह बात अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए जब ठाकुर का दरवाज़ा एकाएक खुलता है तो अत्यंत डर जाने से वह ऐसा सोचती है ।

6. जोखू ने गंदा पानी पीने का निश्चय क्यों किया ?

जोखू को मालूम था कि ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेना आसानी की बात नहीं है । उसकी राय में ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के पाँच लेंगे । इस कारण से ही उसने गंदा पानी पीने का निश्चय किया ।

7. गंगी की डायरी (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

तारीख : ....

आज का यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ? प्यास के मारे मेरे बीमार पति को शुद्ध पानी दे न पाई । आज उनके पूछने पर मैंने जो पानी दिया उससे बदबू आ रही थी । इसलिए मैंने उन्हें वह पानी पीने नहीं दिया । उनकेलिए साफ पानी लाने केलिए मैं रात के अंधेरे में रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल पडी । मैं घडे में रस्सी डालकर पानी खींच रही थी, अचानक ठाकुर दरवाज़ा खोलकर बाहर आए । मैं जल्दी घडा, रस्सी सब छोडकर वहाँ से भाग गयी । यदि पकड लिया तो ... । घर पहुँचकर मैंने देखा, मेरे पति वही गंदा पानी पी रहे हैं । अब मैं उन्हें कैसे मना करूँ? हे भगवान ! हमारी यह बुरी हालत कब बदलेगी ?

8. जोखू की डायरी (अपनी बुरी हालत पर)

तारीख: ……………….

आज बीमार होने पर भी मुझे बदबूदार पानी पीना पडा । गला सूखा जा रहा था, तब मैं गंगी से पीने को कुछ पानी माँगा । पर उससे बदबू आ रहा था । हम जिस कुएँ से पानी भरते थे, उसमें कोई जानवर गिरकर मरा था । निम्नजाति के होने से हमको ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । गंगी तो साहस के साथ ठाकुर के कुएँ से पानी लेने गया । पर निराश लौट आयी । हे भगवान ! हमारी यह हालत कब बदलेगी ?

9. टिप्पणी - गंगी की चरित्रगत विशेषताएँ

गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है । वह निम्नजाति की मानी जाती है । उसके पति जोखू बीमार है । पीने केलिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है । ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है । लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी । रात को चुपके–चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है । उसका विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है । वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी । लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है । इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।

10. जोखू की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ का नायक है जोखू । नीच जाति में जन्म होने से उसको कई प्रकार की यातनाएँ सहना पडता है । लेकिन उसको किसीसे शिकायत नहीं है । वह अच्छी तरह जानता है कि अब की सामाजिक व्यवस्थिति उच्च जाति के अनुकूल है, कानून और न्यायालय उनके पक्ष में है । इसलिए उच्च वर्ग के विरुद्ध आवाज़ उठाने से कोई फायदा नहीं । वह बीमार से परेशान है, प्यास मिटाने कुछ शुद्ध पानी पीना चाहता है । फिर भी ठाकुर के कुएँ पर पानी भरने जाने से वह गंगी को रोकता है । वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता है । अपने परिवार को नष्ट न होने के लिए उस समय समाज में पनपे सामाजिक असमानताओं को सहने वह तैयार हो जाता है । वह ठाकुर जैसे लोगों के विरुद्ध कुछ करना नहीं चाहता, क्योकि वह जानता है कि ऐसा करने पर यहाँ जीना भी मुश्किल हो जाएगा ।

11. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?
जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।
गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ जाएगी तो ?
जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?
गंगी – नहीं ।
जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?
गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।
जोखू – फिर क्या हुआ ?
गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।
जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?
गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !
जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

12. पटकथा (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

स्थान - एक झोंपडी का भीतरी भाग ।
समय - रात के 10 बजे ।
पात्र - गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)
दृश्य का विवरण – गंगी घर पहुँचकर देखा कि पति जोखू लोटे से वही मैला-गंदा पानी पी रहा है । गंगी उनसे बातें करने लगती है ।

संवाद –

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?
जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।
गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आपकी बीमारी बढ जाएगी तो ?
जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?
गंगी – नहीं ।
जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?
गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।
जोखू – फिर क्या हुआ ?
गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।
जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?
गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !
जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

(गंगी निराशा से जाकर सोती है ।)

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRIPS

13. ठाकुर की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ का एक प्रमुख पात्र है ठाकुर। वे ऊँच जाति के हैं। वे बहुत क्रूर स्वभाव के हैं। वे निम्न जाति के लेगों को अपने कुएँ से पानी भरने न देंगे। यदि कोई ऐसा करें तो उनके हाथ-पाँव तुडवा आएगी। अब की सामाजिक व्ववस्थिति उनके अनुकूल है,कानून और न्यायालय उनके पक्ष में है। वे चोरी करते हैं,जाल-फरेब करते हैं और झूठे मुकदमे करते हैं। काम करा लेते हैं पर मजूरी नहीं देते हैं। सभी लोग उनसे बहुत डरते हैं। इस प्रकार हम उनमें एक क्रूर,छुआछूत के भाव रखनेवाले आदमी को देख सकते हैं।

14. गंगी का पत्र (पानी लाने की उसकी परेशानी)

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्यारी माँ,

आप कैसी हैं? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। आपकी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

हमेशा मन में आपकी याद आती है। वहाँ पहुँचने केलिए मन में बडी चाह है। लेकिन अपने परिवार की हालत देखकर मैं चुप होकर कैसे बैठूँगी? माँ, जोखू को बीमार पडे कुछ दिन बीत गए। हमें साफ पानी नहीं मिलता है। गंदा पानी पीने से बीमारी बढने की संभावना है। इसलिए एक दिन साफ लेने केलिए मैं ठाकुर के कुएँ की जगत पर गई। रात नौ बजे के बाद मुझे एक मौका मिला। मैंने घडा और रस्सी कुएँ में डालकर तेज़ी से पानी खींचकर कुएँ की जगत पर रखा। उस वक्त ठाकुर का दरवाज़ा खुल गया। मेरे हाथ से घडा पानी में गिरा। ठाकुर को वहाँ आते देख मैं भागकर घर पहुँची। भाग्य से मेरी जान बच गयी। अब हम गंदा पानी पीकर जीते हैं।

माँ एक दिन यहाँ आइए। तब सब हाल देखें। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

15. मित्र के नाम जोखू का पत्र (अपनी परेशानी के बारे में)

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? काम करने केलिए जाते हो न? यहाँ कई दिनों से वर्षा हो रही है । तुमसे कुछ विशेष बात बताने केलिए मैं यह पत्र लिखता हूँ।

मैं कई दिनों से बीमार हूँ। प्यास के मारे मेरा गला सूख रहा था। मैं एक लोटे में पानी लेकर पीने केलिए मुँह से लगाया। सख्त बदबू के कारण पी नहीं सका। मारे प्यास के कारण नाक बंद करके गंदा पानी पीना चाहा। लेकिन गंगी ने मना किया। मेरा हाल देखकर गंगी घडा लेकर ठाकुर के कुएँ पर गई। मैंने उसे मना किया। ठाकुर के लोगों की नज़र में पडे तो... । परवाह किए बिना वह गई। मैं घंटों तक उसका इंतज़ार करता रहा। गला पूरी तरह सूख रहा था। फिर भी मैं प्रतीक्षा करता रहा। रात बहुत हो गई है। गंगी अभी तक नहीं आई। अब स्वच्छ पानी की प्रतीक्षा से कोई लाभ नहीं है। गंदा पानी पीना ही पडेगा। मैं लोटा लेकर पानी पी रहा था। तब गंगी ज़ोर से दरवाज़ा खोलकर कमरे के अंदर आई। उसने ठाकुर के यहाँ का सारा हाल बताया। मैंने उसे आस्वासन दिया। हम क्या करें? अछूत हैं न?

वहाँ तुम्हारी खबर क्या-क्या हैं ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCPHS